

सुकून लेकर वापस जाते हैं। इस बीच सन् 1991 में उदयपुर जिलान्तर्गत सलूम्बर तहसील के दौलपुरा गाँव निवासी श्री लालसिंहजी चुण्डावत व श्रीमती लालकुँवर की पुत्री कुमारी उम्मेद चुण्डावत के साथ वे विवाह के बन्धन में बँधे। विवाहोपरान्त सन् 1995 में पहली बार उनके आँगन में पुत्री किरण की किलकारियाँ गुंजी। इसी क्रम में सन् 1997 में पुत्र कुलदीप व सन् 2000 में चन्द्रदीप का जन्म हुआ। इसके बावजूद अपने घर तथा परिवार से भी ज्यादा समय वे आगन्तुक लोगों की बाधाओं को दूर करने एवं कल्लाजी महाराज की साधना व आराधना के साथ-साथ इस धाम के विकास से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं पर चिन्तन-मनन और विचार-विमर्श करने में ही पूरा करते हैं। फल स्वरूप यहाँ आने वाले भक्तों और भामाशाहों की सहभागिता से इस धाम का स्वरूप निरन्तर निखरता जा रहा है।

इसी कड़ी में यहाँ पर प्रथम बार मई 1996 में बृहद् स्तर पर शतचण्डी महायज्ञ एवं रुद्राभिषेक का आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री लक्ष्मणसिंहजी चौहान के संरक्षण में महन्त श्री भीमसिंहजी चौहान द्वारा हुए इस विराट महामहोत्सव में कमधज कल्ला राठोड़ एवं गातरोड़जी महाराज के मुख्य मंदिर सहित सीताकाली माताजी मंदिर, सर्पेश्वर महादेव मंदिर, कहभंजन हनुमान मंदिर व कल्लाजी के गुरु भैरवदेव के मंदिर की वैदिक प्रतिष्ठा हुई, जिसमें इस धाम के हजारों भक्तों ने धर्म लाभ लिया। तदुपरान्त 23 दिसम्बर 1996 को इस मंदिर के पितृपुरुष श्री लक्ष्मणसिंहजी चौहान का देहावसान हो गया, जिससे महन्त श्री के कन्धों पर कई गुना जिम्मेदारियाँ एक साथ आ पड़ी। किन्तु ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने इस धाम के विकास में कदापि कोई कमी नहीं आने दी।

उनकी इस दृढ़ संकल्प शक्ति से 'श्री काली कल्याण धाम वरदा' दिन दूनी-रात चौगुनी गति से प्रगति के पथ पर अनवरत आगे बढ़ता रहा और इसी का परिणाम है कि सन् 2003 में 4 मई से 12 मई तक यहाँ पर महन्त श्री भीमसिंहजी चौहान के सानिध्य में विदेशी यजमान नीताबेन शाह व स्वाईजर मनफ्रेड शाह

(आस्ट्रिया) और बेन्ट डिटल (जर्मनी) द्वारा सहस्रचण्डी महायज्ञ एवं 27 कुण्डीय होमात्मक महारुद्र का आयोजन हुआ। पं. श्री मोहनलालजी भट्ट (भीलूडा) के आचार्यत्व में हुए इस नव दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक अनुष्ठान में कल्लाजी के प्रति अपनी आस्था की आहूति लेकर श्रद्धालुओं की रेलमपेल लगी रही। इसी क्रम में श्री काली कल्याण धाम वरदा के विघ्नहारी चमत्कारों से मेवाडी माटी में भी कल्लाजी के नाम की घर-घर ज्योत जलने लगी और उदयपुर अंचल के गदगद कल्याण भक्तों की इस भक्ति भावना को भाँपकर महन्त श्री भीमसिंहजी चौहान ने "आकाशवाणी के सामने, पुरोहितों की मादडी, उदयपुर" में गणेश चतुर्थी के शुभ अवसर पर 10 सितम्बर 2002 मंगलवार को श्री काली कल्याण धाम की नींव रखी। जो श्रद्धालुओं के सहयोग व सम्बल से तीन वर्ष के अल्पसमय में ही एक मनमोहक मंदिर के रूप में विकसित हो गया। तदपश्चात् श्री काली कल्याण धाम उदयपुर के प्रतिष्ठापक गादीपति महन्त श्री भीमसिंहजी चौहान के सानिध्य में सन् 2006 में शतचण्डी महायज्ञ व होमात्मक महारुद्र के साथ इस मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। वेदाचार्य पं. श्री भगवती शंकरजी जेठाणा के आचार्यत्व में 17 मई से 20 मई तक हुए इस प्रतिष्ठोत्सव में सात फीट ऊँची नवमुखी नाग कल्याण की एक सत्यम् शिवम् सुन्दरम् प्रतिमा एवं छह फिट ऊँची सीताकाली माता की चित्ताकर्षक मूर्ति वैदिक विधि-विधान से प्रतिष्ठित की गई।

सम्प्रति श्री काली कल्याण धाम उदयपुर में प्रत्येक माह के पहले और तीसरे मंगलवार को कल्लाजी महाराज की गादी लगाई जाती है, जहाँ पर महन्तजी द्वारा कल्लाजी की शक्ति के माध्यम से दुख निवारण होता है। इसी क्रम में इस मंदिर परिसर में ही फिल्म जगत से जुड़े श्री हरीशचन्द्र गेहूवाडा पुत्र श्री नरेन्द्रसिंहजी शक्तावत (मुम्बई) ने भी अपनी स्वर्गीय माताजी श्रीमती गीता कुँवर की स्मृति में भैरव मंदिर का निर्माण कर अपनी आस्था को आकार दिया। वर्तमान में इस धाम की सिद्धि व प्रसिद्धी के परिणाम से मंगलवार व रविवार के अलावा कल्याण जयन्ती, गोगानवमी, नवरात्री, पाटोत्सव (20 मई), गुरुपुर्णिमा